http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 2, 14-15

Article ID: 358

करेला में लगने वाले कीट एवं रोग नियंत्रण

शुभम पटेल[1], डा. हेमंत कुमार सिंह[2], श्याम प्रकाश[3], सुधांशु सिंह[4]

[1]शोध छात्र, [2]सह – प्राध्यापक (पादप रोग विज्ञान विभाग)
[3]शोध छात्र, (सब्जी विज्ञान विभाग)
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ. प्र.)
[4](शोध छात्र, सब्जी विज्ञान विभाग)
सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

करेला कद्दूवर्गीय सब्जियों में प्रमुख रूप औशधीय गुणों के कारण से उगाई जाने वाली फसल है। यह अपने विशेष कारण सब्जियों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी खेती भारत वर्ष में खरीफ और जायद दोनों ऋतुओं में समान रूप से की जाती है। करेले के कच्चे फलों का रस मधुमेय के रोगियों के लिये के लिए भी बहुत उपयोगी है और उच्च रक्त चाप के मरीजों के लिए बहुत लाभदायक होता है। है इसमें उपस्थित कडुवाहट (मोमोर्डसीन) मनुष्य के खून को साफ करने में काफी उपयोगी है।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

कदैद्दू का लाल कीट (रेड पम्पकिन बिटिल)

इस कीट का वयस्क चमकीली नारंगी रंग का होता है तथा सिर, वक्ष एवं उदर का निचला भाग काला होता है। सुण्डी जमीन के अन्दर पायी जाती है। इसकी सुण्डी व वयस्क दोनों क्षति पहुँचाते हैं। । प्रौढ़ पौधों की छोटी पत्तियों पर ज्यादा क्षति पहुंचाते हैं। यब (इल्ली) जमीन में रहती है जो पौधों की जड़ पर आक्रमण कर हानि पहुँचाती है। ये कीट जनवरी से मार्च के महीनों में सबसे अधिक सक्रिय होते है। अक्टूबर तक खेत में इनका प्रकोप रहता है। फसलों के बीज पत्र एवं 4-5 पत्ती अवस्था इन कीटों के आक्रमण के लिए सबसे अनुकूल है। प्रौढ़ कीट विशेशकर मुलायम पत्तियां अधिक पसन्द करते है। अधिक आक्रमण होने से पौधे पत्ती रहित हो जाते है।

नियंत्रण:

सुबह ओस पड़ने के समय राख का बुरकाव क्रने से भी प्रौढ़ पौधा पर नहीं बैठता जिससे नुकसान कम होता है। जैविक विधि से नियंत्रण के लिए अजादीरैक्टिन 5 प्रतिशत, 0. 5 मिलीलीटर की दर से दो या तीन छिड़काव करने से लाभ होता है। इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर कीटनाशी जैसे डाईक्लोरोवास 76 ईसी., 1.25 मिली/लीटर या ट्राट्राइक्लोफेरानइक्लोफेरान 50 ईसी 1 मिली लीटर / लीटर की दर से 10 दिनों के अन्तराल पर पर्णीय छिडकाव करें।

फल मक्खी:

इस कीट की सूण्डी हानिकारक होती है। प्रौढ़ मक्खी गहरे भूरे रंग की होती है। इसके सिर पर काले तथा सफेद धब्बे पाये जाते हैं।

नियंत्रण: गर्मी की गहरी जुताई या पौधे के आस पास खुदाई करें ताकि मिट्टी की निचली परत खुल जाए जिससे फलमक्खी का प्यूपा धूप द्वारा नश्ट हो जाये ग्रसित फलों को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए। प्रतिकर्शी कोटनीशी जैसे क्लोरेट्रानीलीप्रोल 18.5 एससी., 0.25 मिली/लीटर या डाईक्लारोवास 76 ईसी. 1.25 मिली/लीटर पानी की दर से भी छिड़काव कर सकते हैं।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

चूर्णोल फफूँद :

रोग का प्रथम लक्षण पत्तियां और तनों की सतह पर सफेद या धुँधले धुसर दिखाई देती है। कुछ दिनों के बाद वे घले चूर्ण युक्त हो जाते है। सफेद चूर्णी पदार्थ अंत में समूचे पौधे की सतह को ढक लेता है। जो कि कालान्तर में इस रोग का कारण बन जाता है। इसके कारण फलों का आकार छोटा रह जाता है।

नियंत्रण:

इसकी रोकथाम के लिए रोग ग्रस्त पौधों को खेत में इकट्ठा क्रके जला देते हैं। फफूंदनाशक ½ मीली./लीटर या ट्राइडीमोर्फ दवा जैसे ट्राइड माइक्लोब्लूटानिल का 1 ग्राम/ 10 लीटर पानी के साथ। साथ घोल बनाकर सात दिन के अंतराल पर छिडकाव करें।

मृदुरोमिल फफूंदी:

यह रोग वर्शा एवं गर्मी वाली दोनों फसल में होते इस रोग का प्रकोप अधिक है। है। उत्तरी भारत में लक्षण पत्तियों पर कोणीय धब्बे जो शिराओं है। इस रोग के मुख्य लक्षण पनिया है पर सीमित होते हैं। ये पत्ती के ऊपरी पृश्ठ पर पीले रंग के फफूंद की वृद्धि होती है। तथा नीचे की तरफ रोयेदार

नियंत्रण:

बीजों को मेटलएक्सल नामक कवकनाशी की 3 ग्राम दवा प्रति किः ग्रा बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए तथा मैकोंजेब 0.25 प्रतिशत पानी में घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए। छिड़काव रोग के लक्षण प्रारम्भ होने के तुरन्त बाद करना चाहिए। संक्रमण की उग्र दशा में साइमअक्सानिल मैकोजेब 15 ग्रा /लीटर या मेटालेक्सिल मैकोजेब 25 ग्रा/ली या मैटीरैम 25 ग्रा/ली. पानी के साथ घोल बनाकर 7 से 10 दिन के अन्तराल पर 3-4 बार छिडकाव करें। फसल को मचान पर चढ़ाकर खेती करना चाहिये।

फल विगलन रोग :

इस रोग से प्रभावित करेले के फलों पर कवक के की अत्यधिक वृद्धि हो जाने से फल सड़ने लगता है। धरातल पर पड़े फलों का छिलका नरम, गहरे हरे रंग का हो जाता है। आर्द्र वायुमण्डल में इस सडे हुए भाग पर रूई के समान घने कवक का जाल विकसित हो जाते हैं। भण्डारण और परिवहन के समय भी फलों में यह रोग फैलता है।

नियंत्रण :

खेत में उचित जल ल निकास की व्यवस्था करना चाहिये। फलों को भूमि के स्पर्श से बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। भण्डारण एवं परिवहन के समय फलों में चोट लगने से बचाएँ तथा हवादार एवं खुली जगह पर रखें।

मोजैक विशाणु रोग:

यह रोग विशेशकर नई पतियों में चितकबरापन और सिकुड़न के रूप में प्रकट होता है। पत्तियाँ छोटी एवं हरी-पीली हो जाती है। संक्रमित पौधे का हौस शुरू हो जाता है और उसकी वृद्धि रूक जाती है। इसके आक्रमण स पर्ण छोटे और पुश्प पत्तियों में बदले हुए दिखाई खाई पड़ते हैं। कुछ हैं। कुछ पुश्प गुच्छों में में बदल जाते है ग्रसित पौधा बौना रह जाता है और उसने फलत बिल्कुल नहीं होता है।

नियंत्रण :

इस रोग की रोकथाम के लिए कोई प्रभावी उपाय नहीं हैं। लेकिन विभिन्न उपायों के द्वारा इसका काफी कम किया जा सकता है। खेत में से संग ग्रस्त पौधों को उखाडकर जल देना चाहिए। इमिडाक्लोरोप्रिड 0.3 मी लो / लीटर का घोल बनाकर दस दिन के अन्तराल में छिड़काव करें।